नमो तस्य भगवतों अरहतो सम्मासम्बुद्धस्य बौद्ध धर्म के विकास में समाजिक योगदान

डॉ० तपेशवर कुमार

डॉ0 अमरनाथ सिंह

बौद्ध धर्म के प्रणेता का जन्म लगभग 563 ई0 पू0 कौशाल जनपद के शाक्य गणराज्य के अंतर्गत कपिलवस्तु के लूम्बनी नामक वन में हुआ था, जिन्हें हमलोग गौतम बुद्ध के नाम से जानते है। जिनका धर्म पूरी दुनिया में अकाट्य बढ़ता चला गया उसका मुख्य कारण उनके विचारों को कोई भी धर्म खण्डन नहीं किया।

29 वर्ष की अवस्था में यशोधरा से उत्पन्न राहूल का जन्म सिद्धार्थ के पुत्र रूप में हुआ था। राहुल के जन्म के दिन ही कुमार सिद्धार्थ गृह त्याग किए थे। जिसे महाभिनिष्क्रमण कहा जाता है। महामिनिष्क्रमण में उनका सारथी छन्दक और अश्व कन्थक साथ था। अनोमा नदी तट पर अपने सारथी और अश्व को छोड़कर काशाय वस्त्र धारण कर राजगृह की ओर प्रस्थान किए। उस समय राजगृह सम्पूर्ण जन्बुद्वीप में शिक्षा और सांस्कृतिक केन्द्र के रूप में विख्यात था। उस समय छः दार्शनिकों के पास जाकर आध्यात्मिक से संबंधित विचार विमर्श किया परन्तु वे सन्तुष्ट नहीं हुए। तत्पश्चात वे उदक राम पुत और अलार कलाम आध्यामिक गुरू से योग शिक्षा ग्रहण किया। उन दोनों योग गुरूओं से भी उन्हें सन्तुष्टि नहीं मिली। तो वे तत्कालीन उरूवेला के निञंजना नदी के तट पर छः वर्षों तक कठोर तपस्या की फिर भी उन्हें सम्बोधि लाभ नहीं हुआ। अन्त में चार आर्य सत्यों का साक्षात्कार कर 491 ई0पू0 के वैशाखी पूर्णिमा को आध्यात्मिक जगत में बुद्ध के नाम से प्रचलित हुए। इसी वर्ष ऋशिपतन मृगदाय में चार आर्य सत्यों तथा आर्य आष्टांगिक मार्ग से सम्बंधित प्रवचन से पंचवर्गीय भिक्षुओं को लाभान्वित किया। चार आर्य सत्य एवं आष्टांगिक मार्ग से सम्बन्धित बुद्ध का वच नही धर्मचक्र प्रवर्तन के नाम से प्रचलित हुआ।